

० गीतु ०

चारई वेद चवनि, सन्त साख दियनि,
सतिगुर महिमा प्यारी, सभ देवनि खां न्यारी।
जेके शरणि अचनि, से था रंगिड़े रचनि,
ध्यान धारणा तिनि धारी, सभ देवनि-॥

जिनि नाम बुधण ऐं दर्शन सां,
प्राणनि में शान्ति संचारु थिए।
वचन अमृत जे वर्षा सां,
जेको अनूपमु आनन्दु दानु दिए॥
सारो मोहु छुटे, सभु प्यास मिटे,
थिए नजर कृपा वारी, सभ देवनि-॥

जहिंजी खोज में कोटि जन्म खां,
जीउ भटिकन्दो आयो आ।
सो सुख रूप सलोनो साहिबु,
सेघ में गुरुनि लखायो आ॥
सची जोति दिनी, मति रस में भिनी,
फूली दिलि जी फूलवाड़ी, सभ देवनि-॥

सतिगुरु भगुवन्तु, भगुवन्तु सतिगुरु,
इहा सारु समुझ पोइ आ पाती।
प्रभु कृपा जो अवितारु आ सतिगुरु,
लाल लगनि जहिं आ लाती॥

खोले दिलि जी दरी, दिनो हथिड़े हरी,
गदु तोसां आ गिरधारी, सभ देवनि-॥३॥

रस राह जो रहिबरु, गुणनि में गहिबरु,
बिनु कारण कृपालु गुरु।
प्रेम जो वितरणु करे जगत में,
शरणागत प्रतिपालु गुरु।
हिक कृपा जी कोर, तारे अधम किरोड़,
करे ब्रई लोक सुखकारी, सभ
देवनि-॥४॥

सत् चित् आनन्दु विग्रहु सतिगुरु,
माया ऐं कर्म खां पारि रहे।
जहिंजे सत् उपदेश बुधण सां,
जीउ परम पदु सहजि लहे॥
सो मैगसिचन्द्रु मधुरता मन्दिरु,
दिए दीननि दिलिदारी, सभ देवनि-॥५॥